



Mr.Nitin Soni

28 Feb 1991

03:00 PM

Seoni

Model: All-Remedies-Report

Order No: 121205101

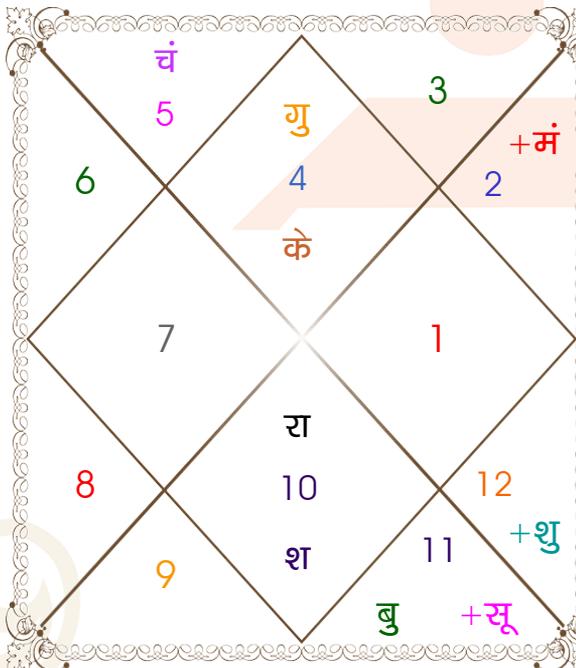
तिथि 28/02/1991 समय 15:00:00 वार गुरुवार स्थान Seoni चित्रपक्षीय अयनांश : 23:44:17
अक्षांश 22:06:00 उत्तर रेखांश 79:36:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:11:36 घंटे

| पंचांग | अवकहड़ा चक्र |
|------------------------------|------------------------------|
| साम्पातिक काल : 01:19:13 घं | गण _____: राक्षस |
| वेलान्तर _____: 00:12:42 घं | योनि _____: मूषक |
| सूर्योदय _____: 06:34:18 घं | नाड़ी _____: अन्त्य |
| सूर्यास्त _____: 18:14:30 घं | वर्ण _____: क्षत्रिय |
| चैत्रादि संवत _____: 2047 | वश्य _____: वनघर |
| शक संवत _____: 1912 | वर्ग _____: मूषक |
| मास _____: फाल्गुन | र्युजा _____: मध्य |
| पक्ष _____: शुक्ल | हंसक _____: अग्नि |
| तिथि _____: 15 | जन्म नामाक्षर _____: मे-मेहर |
| नक्षत्र _____: मघा | पाया(रा.-न.) _____: रजत-रजत |
| योग _____: सुकर्मा | होरा _____: मंगल |
| करण _____: बव | चौघड़िया _____: अमृत |

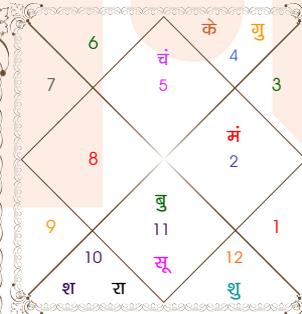
| विंशोत्तरी | योगिनी |
|--------------------|-------------------------|
| केतु 1वर्ष 4मा 9दि | भद्रिका 0वर्ष 11मा 19दि |
| चन्द्र | भद्रिका |
| 09/07/2018 | 17/02/2023 |
| 09/07/2028 | 18/02/2028 |
| चन्द्र 09/05/2019 | भद्रिका 29/10/2023 |
| मंगल 08/12/2019 | उल्का 28/08/2024 |
| राहु 08/06/2021 | सिद्धा 19/08/2025 |
| गुरु 08/10/2022 | संकटा 28/09/2026 |
| शनि 09/05/2024 | मंगला 18/11/2026 |
| बुध 08/10/2025 | पिंगला 28/02/2027 |
| केतु 09/05/2026 | धान्या 30/07/2027 |
| शुक्र 08/01/2028 | भामरी 18/02/2028 |
| सूर्य 09/07/2028 | |

| ग्रह | व | अ | अंश | राशि | नक्षत्र | पद | स्वामी | अं. | स्थिति | षट्बल | चर | स्थिर | ग्रह तारा |
|-------|---|---|----------|------|------------|----|--------|-------|------------|-------|--------|--------|-----------|
| लग्न | | | 02:55:27 | कर्क | पुनर्वसु | 4 | गुरु | राहु | --- | 0:00 | | | |
| सूर्य | | | 15:33:04 | कुंभ | शतभिषा | 3 | राहु | शुक्र | शत्रु राशि | 1.29 | अमात्य | पितृ | साधक |
| चंद्र | | | 10:44:40 | सिंह | मघा | 4 | केतु | शनि | मित्र राशि | 1.09 | ज्ञाति | मातृ | जन्म |
| मंगल | | | 19:40:47 | वृष | रोहिणी | 3 | चंद्र | केतु | सम राशि | 1.33 | आत्मा | भ्रातृ | क्षेम |
| बुध | अ | | 14:04:14 | कुंभ | शतभिषा | 3 | राहु | बुध | सम राशि | 0.85 | भ्रातृ | ज्ञाति | साधक |
| गुरु | व | | 11:14:01 | कर्क | पुष्य | 3 | शनि | चंद्र | उच्च राशि | 1.71 | पुत्र | धन | मित्र |
| शुक्र | | | 13:40:20 | मीन | उ०भाद्रपद | 4 | शनि | राहु | उच्च राशि | 1.07 | मातृ | कलत्र | मित्र |
| शनि | | | 08:38:16 | मक | उत्तराषाढा | 4 | सूर्य | शुक्र | स्वराशि | 1.39 | कलत्र | आयु | विपत |
| राहु | व | | 03:42:40 | मक | उत्तराषाढा | 3 | सूर्य | शनि | मित्र राशि | --- | --- | ज्ञान | विपत |
| केतु | व | | 03:42:40 | कर्क | पुष्य | 1 | शनि | शनि | मित्र राशि | --- | --- | मोक्ष | मित्र |

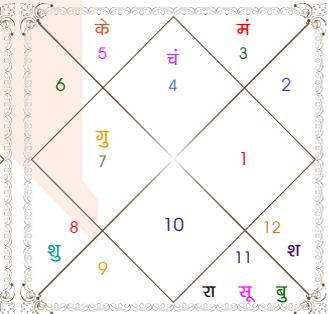
लग्न-चलित



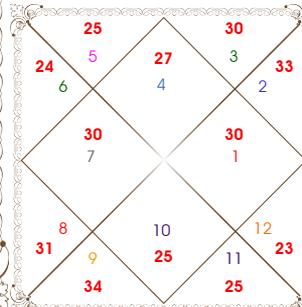
चन्द्र कुंडली



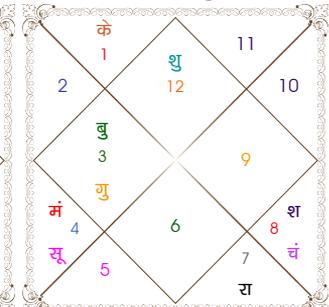
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 | ----- |

द्वितीय चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 13/07/2034-27/08/2036 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046 | ----- |

तृतीय चक्र:

| | | |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया | 14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया | 24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया | 30/08/2068-04/11/2070 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया | 05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076 | ----- |

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

| |
|------------------------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया |

फल

| |
|------|
| शुभ |
| अशुभ |
| अशुभ |
| शुभ |
| सम |

क्षेत्र

| |
|----------------|
| भाग्योदय |
| बुरा स्वास्थ्य |
| धन |
| पराक्रम |
| सन्तति कष्ट |

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

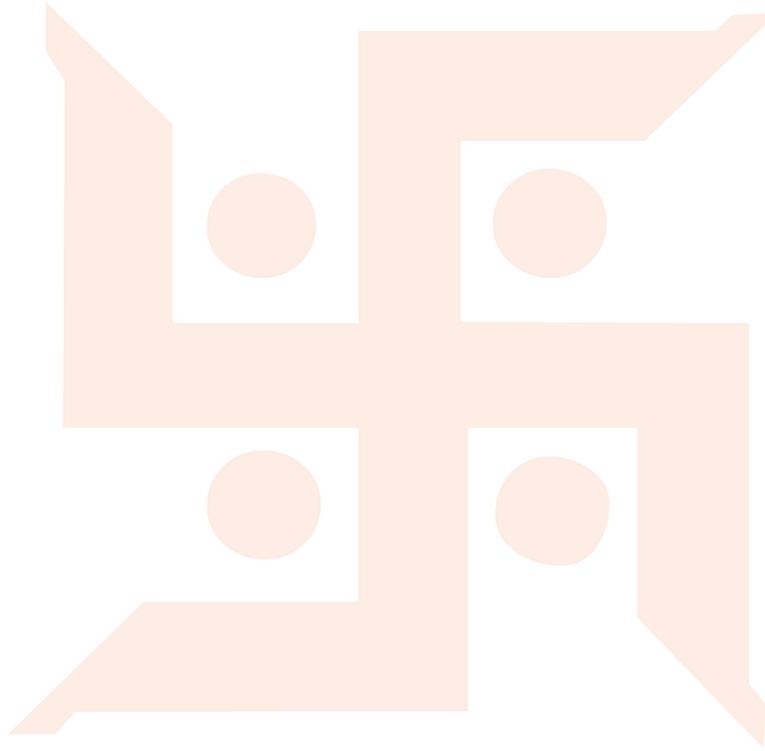
**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके क्रय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित्त या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में तक्षक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। फलस्वरूप जातक को पैतृक धन सम्पत्ति का अभिलषित फल प्रायः प्राप्त नहीं होता है। पैतृक सम्पत्ति को या तो दान दे देता है या आंशिक रूप में नुकसान हो जाता है। प्रेम प्रसंग में आंशिक असफलता होती है एवं गुप्त प्रसंग से धोखा होने की संभावना अधिक रहती है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं और वे समय-समय पर पीड़ा पहुँचाते रहते हैं। जातक को साझेदारी के काम में नुकसान मिलता है।

इस योग के कारण जातक लालची प्रवृत्ति के, लाटरी, जुआ, सट्टा आदि के शैकीन हो जाते हैं। बनते कार्यों में थोड़ी बहुत रुकावटें आती हैं। कभी-कभी बड़ा पद मिलते-मिलते रह जाता है। किसी न किसी कारण से मानसिक परेशानी व चिन्ता पीछा नहीं छोड़ती। जातक को प्रायः पुत्र सन्तान का अभाव रहता है तथा कन्या से मानसिकता जुड़ती नहीं है। ऐसे व्यक्ति को अपने जीवन साथी के साथ सदैव समझौते का रुख अपनाना चाहिये तभी गृहस्थ जीवन विशेष रूप से सुखी रह सकता है।

इस योग के प्रभाव से इन्द्रिय जन्य गुप्त रोग जीवन में कभी-कभी परेशान करते रहते हैं। दूसरों को दिया हुआ पैसा प्रायः वापस नहीं आता है। फलस्वरूप जातक की आर्थिक स्थिति आंशिक रूप में नाजुक हो जाती है।

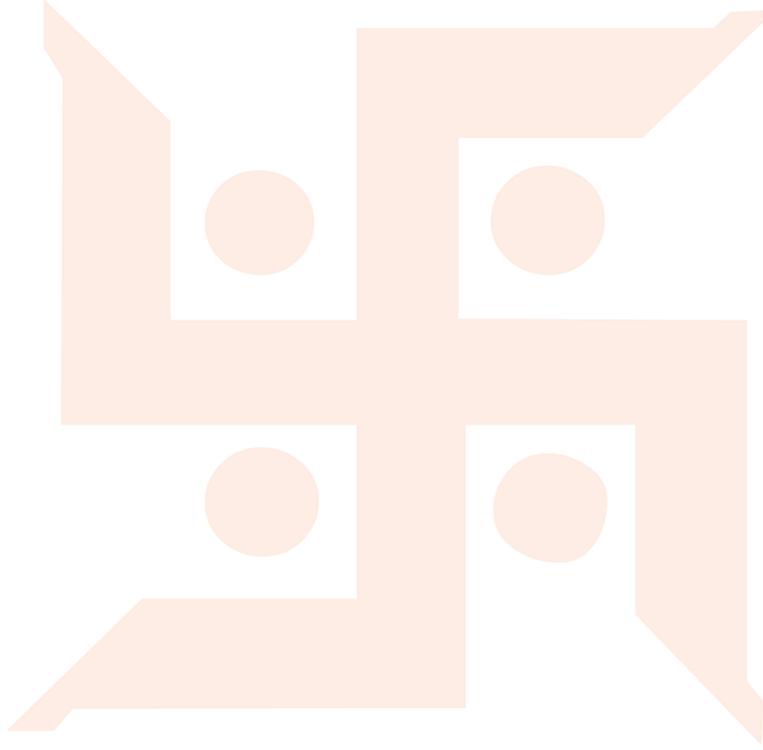
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।

10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

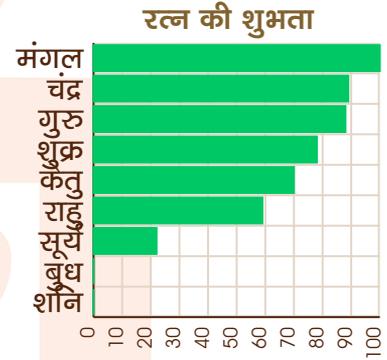


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | शुभता | क्षेत्र |
|----------|-------|-------|---|
| मूंगा | मंगल | 100% | धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख |
| मोती | चंद्र | 89% | धन, स्वास्थ्य |
| पुखराज | गुरु | 88% | स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| हीरा | शुक्र | 78% | भाग्योदय, धनार्जन, सुख |
| लहसुनिया | केतु | 70% | स्वास्थ्य, धन |
| गोमेद | राहु | 59% | दम्पति |
| माणिक्य | सूर्य | 22% | दुर्घटना, धन हानि |
| पन्ना | बुध | 0% | दुर्घटना, व्यय, पराक्रम हानि |
| नीलम | शनि | 0% | दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना |



दशानुसार रत्न विचार

| दशा | समाप्ति | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| केतु | 09/07/1992 | 0% | 77% | 100% | 0% | 88% | 84% | 0% | 44% | 83% |
| शुक्र | 09/07/2012 | 0% | 77% | 100% | 0% | 88% | 91% | 12% | 66% | 77% |
| सूर्य | 09/07/2018 | 47% | 95% | 100% | 0% | 94% | 66% | 0% | 44% | 58% |
| चंद्र | 09/07/2028 | 34% | 100% | 100% | 0% | 88% | 78% | 0% | 44% | 58% |
| मंगल | 09/07/2035 | 34% | 95% | 100% | 0% | 94% | 78% | 0% | 44% | 77% |
| राहु | 09/07/2053 | 0% | 77% | 88% | 0% | 88% | 84% | 12% | 72% | 58% |
| गुरु | 09/07/2069 | 34% | 95% | 100% | 0% | 100% | 66% | 0% | 59% | 70% |
| शनि | 09/07/2088 | 0% | 77% | 88% | 0% | 88% | 84% | 24% | 66% | 58% |
| बुध | 10/07/2105 | 34% | 77% | 100% | 0% | 88% | 84% | 0% | 59% | 70% |

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ॥

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा, मोती, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पुखराज आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा व हीरा रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

माणिक्य, पन्ना व नीलम रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत

विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको धैर्यवान बनाएगा। आपको साहसपूर्ण कार्यों से लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने क्रोध पर नियन्त्रण बनाए रखेंगे। मूंगे रत्न शुभता से आपकी वाणी में मिठास और महत्वकांक्षाओं की वृद्धि होगी। रत्न प्रभाव से आप अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करेंगे। मूंगा रत्न आपको ऊर्जावान, स्फूर्तिदायक रख आपके जोश को बढ़ाएगा। आपको मूंगा रत्न धारण करना चाहिए।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम भाव एवं दशम भाव के स्वामी तथा मंगल लग्नेश चंद्र के मित्र भी है। यह मंगल योगकारक ग्रह होने के कारण आपके लिए सबसे अधिक शुभ ग्रह है। मंगल रत्न मूंगा आपके लिए अतिउत्तम रत्न है। संतान सुख और शैक्षिक जीवन में अनुकूल सफलता पाने के लिए आपको यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको संतान प्राप्ति के योग, पिता एवं आजीविका क्षेत्र से लाभ दिला सकता है। रत्न की शुभता से आपको भूमि, भवन, दैनिक व्यवसाय, परिश्रम से सम्मान प्राप्ति हो सकती है। मंगल रत्न मूंगा आपके ग्रहस्थ जीवन को भी सुखमय बनाए रख सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का 9 माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आपके लिए शुभ रत्न है इससे आप मधुरभाषी, सहनशील एवं शांति प्रिय व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पारिवारिक स्नेह को सुखद बनाये रखने में मोती अहम भूमिका निभा सकता है। मोती रत्न से धन-धान्य और परिवार में सम्मान की प्राप्ति होगी। मोती रत्न आपकी त्याग भावना, बुद्धिमानी, चंचलता और यश को बढ़ायेगा। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आपका मोती रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इस रत्न की शुभता से परिवार में धन आगमन बना रहेगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में चंद्र लग्न भाव के स्वामी है। लग्नेश चंद्र का रत्न मोती धारण कर आप अपने जीवन को दीर्घकालिन बना सकते हैं। मोती रत्न आपके स्वास्थ्य को अनुकूल, तेज एवं स्फूर्ति दे सकता है। मोती रत्न की शुभता से आप को प्रयासों में सफलता, यश-सम्मान एवं भावुकता में कमी कर सकता है। रत्न शुभता से आप व्यवहारिक बनेंगे तथा आपका मनोबल उच्च रहेगा। मोती रत्न आपको यशस्वी बनाकर व्यवसाय में सफलता दे सकता है। इसके साथ ही रत्न की शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखी रख सकती है। आपके स्वभाव की अस्थिरता को नियंत्रित करने में भी मोती रत्न अहम भूमिका निभा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरुचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में गुरु षष्ठ भाव एवं नवम भाव के स्वामी है। गुरु लग्नेश चंद्र के मित्र एवं त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए शुभ ग्रह होते हैं। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए शुभ फलदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न धारण कर आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। आप विद्या, बुद्धि व संतान से युक्त हो सकते हैं। आपके कार्यों में जो बाधाएं आती हैं वो रत्न शुभता से दूर हो सकती है। छटे भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न रोग, शत्रु तथा ऋणों पर नियन्त्रण बनाये रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। शत्रुओं पर विजय, भाग्य व धर्म को प्रबलता मिल सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूठी में धारण करना चाहिए। पुखराज

रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शुक्र चतुर्थेश एवं आयेश है। शुक्र ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। हीरे की शुभता आपको घर, जमीन-जायदाद, वाहन, प्रतिष्ठा और माता के सुख प्राप्त हो सकते हैं। शुक्र रत्न हीरा आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाए रखने में सहयोग कर सकता है। आय, उन्नति, सफलता के अतिरिक्त यह रत्न आपको बड़ी उम्र के दोस्त, सभी प्रकार के लाभ, इच्छापूर्ति की संभावना, दया, सलाहकार, अनुयायी, दोस्त एवं उत्तम शुभ चिन्तक दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूठी में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित है। इसलिए आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आप परिश्रमी और कर्मठ बनेंगे। लहसुनिया रत्न आपकी मेहनत एवं लगन योग्यता को बढ़ायेगा। लग्न भाव में बैठकर केतु सप्तम भाव से संबंध बना रहे है इसके प्रभाव से केतु रत्न लहसुनिया आपके ग्रहस्थ जीवन को सुख-सौहार्द पूर्ण बनायेगा। लहसुनिया रत्न आपके साहस भाव में बढ़ोतरी करेगा।

केतु कर्क राशि में स्थित है तथा इसका स्वामी चन्द्र दूसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने पर स्व-कुटुम्ब के सुखों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको जनता व सरकार से सम्मान दिलाएगा। यह रत्न आपको मिथ्या वाद से बचाएगा। साथ ही यह रत्न आपके स्वाभिमान को बढ़ाएगा। रत्न शुभता से जमीन जायदाद के संग्रह में आपको सहयोग प्राप्त होगा। रत्न प्रभाव से आपको धनोपार्जन में सफलता मिलेगी एवं यह रत्न आपको मधुर, सौम्य और प्रिय बोलने का गुण प्रदान करेगा, आपकी संग्रह शक्ति बढ़ाएगा। इसके साथ ही आपकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर होगी। इस रत्न को धारण करने पर आपको उत्तम भोजन सेवन की प्राप्ति हो सकती है। परहित में ही आपको आनंद का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। गोमेद रत्न आपको स्वतंत्र व्यापार करने की ओर प्रेरित कर रहा है। रत्न शुभता से आपका कार्य कौशल चतुराई से परिपूर्ण रहेगा। आपका विवाह अपेक्षाकृत शीघ्र या विलम्ब से हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपका अपने जीवनसाथी के मध्य प्रेम संबंध अनुकूल रहेगा। नौकरी के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आपको गोमेद रत्न धारण करना चाहिए। यह रत्न आपके स्वभाव की उग्रता को नियंत्रित रखेगा।

राहु मकर राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के

संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य पहनने पर आपको समय समय पर सरकारी क्षेत्रों में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। पिता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपको पित्त संबंधी रोग हो सकते हैं। हृदय रोग भी यह रत्न आपक दे सकता है। यह रत्न आपकी धैर्य शक्ति में कमी कर क्रोध भाव में वृद्धि कर सकता है। रत्न प्रभाव से आप पर कार्य भार बढ़ सकता है। आपको आंखों से संबंधित रोग परेशान कर सकते हैं। पिता से संबंध मधुर बनाए रखने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में सूर्य द्वितीय भाव के स्वामी है। द्वितीय भाव के स्वामी सूर्य का माणिक्य रत्न धारण आपकी तेजस्विता में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आर्थिक और कौटुम्बिक सम्पन्नता में भी कमी करेगा। रत्न प्रभाव से आपका दांपत्य जीवन असंतोषप्रद हो सकता है। समाज में प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपको नेत्र रोग हो सकते हैं। आपको सगे संबंधियों से विरोध का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको व्यापार की अपेक्षा नौकरी की ओर आकर्षित कर सकता है। सरकारी क्षेत्रों में दिक्कतों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपमें अतिस्वाभिमान और अहंकार भाव दे सकता है।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते हैं। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते हैं। रत्न प्रभाव

से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती हैं। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिष्क और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में बुध तीसरे भाव एवं द्वादश भाव के स्वामी है। बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आपको बंधु बांधवों का सुख कम प्राप्त हो सकता है। पराक्रम भाव के पक्ष से भी यह रत्न आपके लिए अनुकूल फलदायक नहीं रहेगा। भाई-बहनों से संबंधों की मधुरता में कमी हो सकती है। बौद्धिक बल से धनार्जन करने में पन्ना रत्न आपको सहयोग नहीं करेगा। व्यावसायिक यात्राओं में असफलता का सामना आपको करना पड़ सकता है। पन्ना रत्न आपके भाग्योदय में बाधक का कार्य कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यय व्यर्थ हो सकते हैं। व्ययों को नियंत्रित रखने में आपको कष्ट हो सकते हैं। विद्या और बौद्धिक विषयों में आपके साथ परेशानियां बनी रहेंगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आपको शनि जनित क्षेत्रों में व्यवसाय करना हानि दे सकता है। नीलम रत्न वैवाहिक जीवन में आपको अच्छे परिणाम नहीं दे पाएगा। जीवन साथी का स्वभाव मनोनुकूल न होने के कारण आपका दांपत्य जीवन दुष्प्रभावी हो सकता है। नीलम रत्न आपकी भाग्य हानि कर सकता है। ठेकेदारी, कोयला, लोहा एवं खदानों आदि से जुड़े कामों में व्यापार करने पर हानि दे सकता है। मातृ सुख, परिवार सुख और स्वास्थ्य पक्ष से यह नीलम रत्न आपको प्रतिकूल परिणाम दे सकता है। विदेशी माल में एजेन्ट के काम में भी यह रत्न हानि का कारण बन सकता है।

आपकी कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तमेश एवं अष्टमेश है। शनि का रत्न नीलम धारण करना आपके लिए सुख फलदायक नहीं रहेगा। नीलम रत्न आपके भाग्योदय में रुकावट ला सकता है। संतान, जीवन साथी व माता के कष्ट रत्न प्रभाव से बढ़ सकते हैं। यह रत्न आपको पेशाब से संबंधित रोग दे सकता है। शत्रु आपको शारीरिक कष्ट दे सकते हैं। रत्न प्रभाव से आपका मन चंचल रहेगा। मित्रों से मित्रताएं बनती बिगड़ती रहेंगी। यह रत्न आपकी आयु में कमी का कारण बन सकता है। जीवन साथी का स्वास्थ्य कमजोर होगा। गुप्त रोग भी रत्न प्रभाव से प्रभावी हो सकते हैं। यह रत्न आपकी शारीरिक अस्वस्थता को बढ़ाएगा। कलह और अपयश की स्थिति आपके लिए यह रत्न बना सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र

(09/07/2018 - 09/07/2028)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, मूंगा, पुखराज व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल

(09/07/2028 - 09/07/2035)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, मोती, पुखराज, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु

(09/07/2035 - 09/07/2053)

राहु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, माणिक्य व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु

(09/07/2053 - 09/07/2069)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(09/07/2069 - 09/07/2088)

शनि की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, माणिक्य व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(09/07/2088 - 10/07/2105)

बुध की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, हीरा व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कर्क लग्न की हैं। कर्क लग्न आपको संवेदनशील बना रहा है। चर लग्न आपको लगातार कार्य करने का स्वभाव दे रहा हैं। आपको जलीय स्थानों के नजदीकरहना अधिक प्रिय हो सकता हैं। लगातार कार्य करना आपका स्वभाव , बिना थके निरन्तर कार्य करना आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर डालता है। आप भावुक, धैर्यवान है, और कठिन से कठिन समय में भी घबराते नहीं हैं। कुछ विषयों पर आप जिद्धी भी हो जाते हैं। अपने स्वभाव के नकारात्मक पक्ष को छोड़ने का प्रयास आपको करना चाहिए। साथ ही आपको अपनी कार्यप्रणाली में सुधार करना चाहिए। कार्य के घण्टों में से थोड़ा समय आराम के लिए भी निकालें। आप अत्यधिक भावनात्मक हैं इसलिए आपके निर्णय कई बार गलत भी हो जाते हैं।

फिर भी आप जब किसी काम को करने की ठान लेते हैं, तो उसे करके ही बैठते हैं।

कुंडली के 6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव कहलाते हैं। तथा इन भावों के स्वामियों को त्रिक भावेश के नाम से जाना जाता है। त्रिक भाव, भावेश व इन भावों में बैठे ग्रह स्वयं में किसीन किसी प्रकार की अशुभता लिये होते हैं। यही कारण है की ये सभी आपके जीवन में कष्ट और बाधाओं का कारण बन सकते हैं। जिसमें छटा भाव रोग, ऋण और शत्रुओं से कष्ट देता है, इसका स्वामी जिस भाव में जाता है, उसके शुभ फलों में कुछ न कुछ कमी अवश्य करता है। जिसके फलस्वरूप आपको षष्ठ भाव के स्वामी या इस भाव में स्थित ग्रहों की महादशा-अन्तर्दशाओं में भाव सम्बंधित रोग, ऋण या शत्रुओं के द्वारा शारीरिक या मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

6, 8 व 12 भावों में अष्टम भाव विशेष अशुभता लिए होते हैं। इस भाव का स्वामी अष्टमेश, जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम भाव अशुभता, बाधा और पाप का भाव है। और इस भाव या इस भाव के स्वामी से किसी भी भावेश का सम्बन्ध होना, भावेश की शुभता में कमी कर अशुभता को बढ़ाता है। तीसरा और अंतिम त्रिक भाव, द्वादश भाव है जिसे व्यय भाव भी कहा जाता है। द्वादश भाव से हानि, टैक्स, निद्रा, शैथ्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष का विचार किया जाता है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव के विषयों में अशुभता लाते हैं। इन भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

आपके लग्न में षष्ठ भाव व नवम भाव के स्वामी गुरु हैं। षष्ठेश गुरु आपका मामा-मौसी से बैर करा सकता है। संतान सुख में कमी कर सकता है तथा संतान रोगों के प्रभाव में शीघ्र आ सकती है, बुद्धि और विवेक का समय पर उपयोग नहीं मिलता। इसके अतिरिक्त ऋण आदि विषयों में शत्रु बाधक हो सकते हैं।

सप्तम व अष्टम भाव के शनि की यह स्थिति जीवन साथी से प्राप्त होने वाले सुखों में कमी, सरकारी क्षेत्रों व आजीविका क्षेत्रों से अल्प लाभ, धन संचय कठिन, कुटुंबका न्यून सुख, विद्या बुद्धि से अल्प लाभ व संतान सुख में बाधक बनता है।

द्वादश व तृतीय भाव के स्वामी बुध हैं। बुध आपके लग्न के लिए अशुभ ग्रहों की श्रेणी में आते हैं। बुध की यह स्थिति आपको अधिक व्ययों से परेशान, पारिवारिक सुख में न्यूनता, धन संचय दुष्कर, शत्रु संघर्ष से हानि के योग बना सकता है।

सूर्य का अष्टम भाव में होना, सन्तान और शिक्षा क्षेत्र को बाधायुक्त बना रहा है। जीवन में अप्रत्याशित घटनाएं, सरकारी कार्यों में बाधाएं, सरकारी क्षेत्रों से पूर्ण सहयोग प्राप्त न होना, हृदय सम्बन्धी लम्बी अवधि के रोग, पुलिस और ससुराल पक्ष से संबंधों में मधुरता में कमी हो सकती है। सूर्य आपकी विद्वता में कमी कर रहा है, वाणी में कटुता का भाव कुछ अंश तक आ सकता है, धन-संचय में कमी, कुटुंब से मतभेद, अल्पकाल के लिए मिथ्याभाषी हो सकते हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्वन बाधाएं दे सकता है। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता है। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती है। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि और राहु का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।